लखनऊ घराना

* दिल्ली घराने के लगभग सौ वर्ष बाद लखनऊ घराने का उदय हुआ।
* 1739 ई० में नादिरशाह ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया।
* उस समय मुहम्मद शाह रंगीले दिल्ली के शासक
* उन दिनों लखनऊ में पखावज ही एकमात्र ताल वाद्य
* इस बीच सिद्धार खाँ के पौत्र मोदू और बख्शू दिल्ली से लखनऊ आकर बस गये।
* लखनऊ बाज - थपिया बाज के नाम से प्रसिद्ध
* मोदू खाँ के शिष्य - पं० राम सहाय मिज़ नत्थन खाँ, हाजी विलायत अली खाँ
* लखनऊ ~~घराने~~ घराने के शिष्य - आमान खाँ, मैं प्रसाद, सुजान खाँ, फैयाज खाँ, हबीबुल्लाह घन्नू उस्ताद, गंगादयाल पांडे, शेख दाऊद
* शैली - स्याही का प्रयोग तथा लव से ध्वनि निर्माण हुआ
* लग्गी-लड़ी का काम होता था। ठुमरी गायन से प्रभावित था।
* मोदू खाँ की पत्नी को पंजाब घराने की तालीम थी।
* तगन्न, धुंग, नग, नग, किटतक, धेत्ता धिड़नग, आदि बोलों का प्रयोग प्रमुख रूप से